REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 6 | MARCH - 2026

समकालीन हिन्दी टी.वी. समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति

डॉ. राजेश सिं हकुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.

शोध-सार:

समकालीन हिन्दी टी.वी. समाचार चैनलों की भाषा में नई सदी से व्यापक बदलाव नजर आया हैं। प्रसारित भाषा केवल सूचना देने का माध्यम नहीं, बल्कि दर्शकों को जोड़ने और बाजार की जरूरतों को पूरा करने का एक साधन बन गई है। यह शोध-पत्र समकालीन हिन्दी समाचार चैनलों पर प्रसारित संवाद-परिसंवाद, वाद-विवाद, चर्चा-परिचर्चा और रूप-स्वरूप का विस्तृत पुनर्लेखन प्रस्तुत करता है। व्यापक प्रसार ने शब्द-चयन, अभिव्यक्ति के तरीकों और वाक्य-रचना में तेज़ और गहरे बदलाव लाए हैं। चैनलों के युवा एंकर्स के भाषा प्रयोग में अब व्याकरण के अनुशासन से हटकर लचीलापन, अन्य भाषाओं का मिश्रण और उपयोगितावादी हो गया है। भाषा के साथ यह अनुप्रयोग प्रायः सभी प्रकार के समाचारों में दृष्टिगोचर है, परिवर्तनों का सबसे मुखर चलन हिन्दी-अंग्रेजी मिश्रित हिंग्लिश है। शब्दों का आदान-प्रदान ही नहीं हो रहा है बल्कि यह चलन वाक्य रचना, संवाद की गति और सांस्कृतिक संचार में भी है। ऐसी भाषिक प्रवृत्ति संवाद को सरल और सहज बनाती है, परंतु साथ ही भाषा, व्याकरण और साहित्यिक संस्कृति के समक्ष चुनौतियां भी खड़ी करती है। वैश्वीकरण ने हिन्दी टीवी समाचार चैनलों को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रभाव केवल तकनीकी और प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा, विषय-वस्तु और दर्शकों की अपेक्षाओं पर भी दिखाई देता है।

मुख्य बिन्दु: समाचार चैनल, बहुभाषिकता, हिंग्लिश, संस्कृति, भाषिक प्रवृत्ति, वैश्वीकरण और सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना:

समकालीन हिन्दी टीवी समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति भारतीय समाज और संस्कृति के बदलते स्वरूप का दर्पण है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और प्रतिस्पर्धा ने समाचार चैनलों की भाषा को गहराई से प्रभावित किया है। आज समाचार चैनल केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह मनोरंजन, बाज़ार और राजनीति का भी उपकरण बन चुका है। समकालीन हिंदी टी.वी. समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति एक अत्यंत गतिशील और रोचक विषय है। आज के समाचार चैनलों ने सूचना के संप्रेषण के लिए एक ऐसी भाषा को जन्म दिया है, जो पारंपरिक साहित्यिक हिंदी से हटकर आम आदमी की बोलचाल और बाज़ार की ज़रूरतों के करीब है।आज के समाचार चैनलों की सबसे प्रमुख विशेषता हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण

है। अब न्यूज़, पीएम, सीएम, डीएम, सिटी, स्टेट, कैबिनेट, कोटा आदि जैसे शब्दों का प्रयोग आम हो गया है। राष्ट्रीय चैनलों ने अब क्षेत्रीय दर्शकों तक पहुँचने के लिए स्थानीय बोलियों (जैसे- अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी, पंजाबी, राजस्थानी) के शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। भाषा का विवेक बदल रहा है। कोसने, प्रलाप करने, रूढ़ बने रहने, क्षुब्ध बने रहने, क्षुब्ध होने से काम नहीं चलेगा। नया विवेक जरूरी है।

अध्ययन का उद्देश्यः

आज का युग संचार युग है, वर्तमान जीवन घटनाओं, समस्याओं एवं विचारों से भरा है। आज संचार क्रांति की बदौलत समग्र विश्व सिमट गया है। संचार संसाधनों की वजह से दुनिया भर के लोगों में दूरियाँ कम हो गई हैं। संवाद सम्प्रेषण में संचार माध्यमों की भाषा और उसकी विकास यात्रा कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिन्दी टेलीविजन समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्तियों का परीक्षण करना और यह जानने का भी प्रयास है कि इसमें टेक्नालॉजी और वैश्वीकरण की क्या भूमिका है? अध्ययन में यह भी प्रयास है कि बहुभाषिकता ने भाषा के प्रचार-प्रसार में क्या योगदान दिया है। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित बिन्दुओं पर केंद्रित हैः

- टी.वी. समाचार चैनलों पर बहुभाषिकता और हिन्दी का प्रसार।
- टी.वी. समाचार चैनलों की हिन्दी पर वैश्वीकरण का प्रभाव।
- समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति और सामाजिक समरसता।

शोध विधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वृहद् स्तर पर टेलीविजन समाचार चैनलों का अवलोकन, विविध प्रकार के साहित्य एवं समाचार सामग्री का पुनरीक्षण किया गया है जिसमें समाचार पत्र-पत्रिकाएं और न्यूज पोर्टल भी सम्मिलित हैं। प्रविधि के रूप में अवलोकन और अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए हिन्दी के टी.वी. समाचार चैनलों और सम्बंधित साहित्य को आधार बनाया गया है।

समकालीन हिन्दी टी.वी. समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति का विश्लेषणः

भाषा ही संस्कृति, समाज और जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा ही अतीत और वर्तमान के मध्य सेतु का कार्य करती है और भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा ही नर और वानर का विभेद करती है। भाषा में राष्ट्र की लोक संस्कृति और समाज में समरसता के साथ इसमें भावव्यंजना, बहुआयामी खनक, लालित्य एवं जीवंत वैचारिक लय है।

"भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है जिसे यदि तकनीकी रूप से परिभाषित किया जाए तो कहना होगा कि भाषा यादृच्छिक प्रतीकों से निर्मित कोई व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य दूसरे मनुष्यों के मुख से निःसृत ध्वनियों के माध्यम से सामाजिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए संदेशों का परस्पर आदान-प्रदान करता है। इस प्रकार भाषा एक सामाजिक आवश्यकता है।"[1]

किसी राष्ट्र की समृद्धि और संस्कृति के मध्य उत्क्रमणीय अभिक्रिया होती है। इस समीकरण को स्पष्ट करते हुए पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "भारतवर्ष की अपनी समृद्धि संस्कृति को उजागर करने के लिए देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देना जरूरी है। विदेशी भाषा में शिक्षा पाने से हमारा स्वतंत्र चिन्तन कुंठित हो गया है। समूचे राष्ट्र के सांस्कृतिक अभ्युत्थान के लिए भी हमें अपनी भाषाओं को समृद्ध करना आवश्यक है।"[2]

हिन्दी भाषा पर टी.वी.चैनलों ने गहरा असर डाला है और परिवर्तनगामी स्थितियों ने कई बार अचंभित भी किया है। साहित्य जगत नई भाषा की बुनावट को देख रहा है। अनुशासन विखंडित हो रहा हैं। भाषा की परंतरागत संरचना परिवर्तित हो रही है साथ ही शब्दकोश की इमारत में नई मंजिले बन रही हैं। वाक्य विन्यास उलट-पुलट गए हैं, पुरातन और नवाचारी के मध्य संशय है। हिन्दी भाषा तेजी से प्रवास कर रही है, वह देशान्तरों को आर-पार कर रही है इसमें हिन्दी समाचार चैनलों का बड़ा योगदान है।

टेलीविज़न पर प्रसारित समाचार सुने जाते हैं, देखे जाते हैं और पढ़े भी जाते हैं। तात्पर्य यह है कि यह श्रव्य, दृश्य और पाठ्य तीनों माध्यम है। सुनी हुई बातें मनुष्य कभी भूल भी जाता है. पढ़ी हुई चीजें भी कालांतर में धुंधली पड़ने लगती है, लेकिन देखी हुई और सुनी हुई घटनाओं को समय की गति महत्त्वहीन और धूमिल नहीं बना पाती है। आज टेलीविजन काफी सशक्त माध्यम है, जो किसी समाचार, दृश्य, घटना आदि का विवरणात्मक चित्र प्रस्तुत करता है। सी.बी.एस. हैंडबुक में टेलीविज़न समाचार के बारे में अंकित हैः - 'यह समाचारों का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण है, जिसमें तथ्यात्मक, संक्षिप्त और वास्तविक समाचारों को प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है। आज सूचना के माध्यम के रूप में टेलीविज़न समाचार पर लोगों की निर्भरता बढ़ गई है। डॉ. अर्जुन तिवारी दृश्य या चित्र को टेलीविज़न समाचार में सर्वाधिक महत्त्व देते हैं- 'चित्रात्मकता दूरदर्शन का प्राण-तत्व है। एक चित्र हजार शब्दों के बराबर होता है। चित्र समाचार के आभूषण तो होते ही है, साथ ही दर्शकों के मानस को मथने वाले भी होते हैं। टेलीविज़न के चित्र स्वतः बोलते हैं. दर्शकों को भावविह्वल भी कर देते हैं।"[3] टेलीविजन समाचार की यही दृश्यात्मकता लोगों को इतना प्रभावित करती है कि देखने वालों के मन पर काफी समय तक वह दृश्य हावी रहता है।

वर्तमान में शुद्ध हिन्दी के बजाय अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी यानी हिंग्लिश का प्रयोग बढ़ा है। ब्रेकिंग न्यूज, लाइव, अपडेट, एक्सक्लूसिव जैसे शब्द अब हिन्दी समाचारों का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। समाचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए भाषा को सरल और वाक्यों को छोटा रखा जाता है। इसमें भारी-भरकम तत्सम शब्दों के स्थान पर प्रचलित आम बोलचाल के शब्दों को वरीयता दी जाती है। टीआरपी की होड़ में अक्सर अतिरंजित और उत्तेजक भाषा का प्रयोग देखा जाता है। महामुकाबला, आर-पार की जंग, खूनी खेल जैसे शब्दों के माध्यम से समाचारों को नाटकीय बनाया जाता है।

एंकर अब दर्शकों से सीधे संवाद करने वाली शैली का प्रयोग करते हैं। भाषा में औपचारिकता कम हुई है और इसमें आप, हम, देखिए जैसे शब्दों का प्रयोग कर दर्शकों के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव बनाने की कोशिश की जाती है। कई राष्ट्रीय चैनलों ने अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए स्थानीय बोलियों और मुहावरों का समावेश करना शुरू किया है, जिससे भाषा अधिक जीवंत और स्थानीय लगती है। टी.वी. एक दृश्य माध्यम है, इसलिए यहां भाषा दृश्यों की पूरक होती है। संवाददाता और एंकर उन शब्दों का प्रयोग कम करते हैं जो दृश्यों में पहले से ही स्पष्ट हों, ताकि विवरण संक्षिप्त बना रहे।

समाचार चैनलों की अपनी विश्वासनीयता होती है। इन चैनलों पर बेहतर ढंग से किसी विषय/विचार/समस्या का प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है क्योंकि ऐसे सम्प्रेषण में निम्न विशेषताएं समाहित रहती हैंः

1. उद्देश्यपरक
2. सकारात्मक
3. उपयोगितावादी

टी.वी. चैनल संचार का एक माध्यम है न कि उत्पाद। इसका लक्ष्य पूर्व निर्धारित होता है जिसका उद्देश्य लोगों को सूचित एवं शिक्षित करना है। साथ ही जीवन के किसी पहलू से भलीभांति परिचित कराना और लोगों का विकास एवं प्रगति है। टी.वी. चैनल की भूमिका निम्नवत हैः

- ज्ञान का विस्तारः- टी.वी. चैनल का कार्य सूचना प्रसार और साथ -साथ नवीन ज्ञान का प्रसार करना भी है जिससे लोगों को राष्ट्र, समुदाय, भाषा, विश्व के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण घटनाओं, अवसरों, विचारों और खतरों से आगाह किया जा सकता है।
- एक मंच उपलब्ध करानाः- टी.वी. चैनल एक ऐसा प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है जहां से जन-जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दों को जन-जन तक प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित किया जा सकता है।
- शिक्षित करनाः- टी.वी. चैनल बेहतर जीवन यापन के लिए लोगों को भाषा, विचारों, तकनीकों एवं उनके व्यवहार के बारे में शिक्षित-प्रशिक्षित करता भी है जिससे आमजन का जीवन सुखमय हो सके।
- आम सहमति के लिए माहौल बनानाः- टी.वी. चैनल के द्वारा विभिन्न समस्याओं पर केन्द्रित सूचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए जन-जन को जागरूक कर किसी विषय विशेष पर आम सहमति बनायी जा सकती है।

उपर्युक्त भूमिकाओं के निर्वहन के लिए टी.वी. चैनल परानुभूति, विसरण एवं जादुईगुणक का कार्य करता है। UNESCO ने Wilbur Schramn के नेतृत्व में1964 में Mass Media & National Development नामक रिपोर्ट तैयार करवायी जो कि विकास सम्प्रेषण के लिए Blue Print बना। जहां Daniel Lerner और अन्य विद्वानों ने जनमाध्यमों को आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण साधन माना वहीं Schramm ने वृहद स्तर सामाजिक परिवर्तन के लिए जनमाध्यमों को सोने की कुंजी माना।

Schramm मानते है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए लोगों को सूचित प्रोत्साहित और शिक्षित किया जाना चाहिए। सूचना प्रवाह सीमित न होकर जन-जन तक पहुंचना चाहिए। जिससे लोगों की जरूरतों का ज्ञान होगा और लोग भी राष्ट्र निर्माण एवं नीति निर्धारण में सहभागिता कर सकेंगे। सूचना का संवहन ऊर्ध्वाधर दिशा में भी होना चाहिए जिससे महत्व के आधार पर निर्णय किए जा सकें। समाज के संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए आवश्यक है कि कार्य संगठित रूप से हो और कला-कौशल का ज्ञान समाज के सभी स्तरों तक उपलब्ध कराया जाय। यही वह स्थिति है जहां जनसंचार का समाकलन आरम्भ होता है। सूचनाओं की मात्रा और शिक्षण-प्रशिक्षण इतना वृहद है कि दीर्घ सूचना गुणक, जन माध्यम ही विकासशील राष्ट्रों के लिए मात्र आशा/विकल्प है जो विकास की जरूरत की सूचनाओं को समय बद्धता के साथ गुणित रूप से जन-जन तक उपलब्ध करा सकती है।

Schramm का यह भी मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को कार्य के अनुसार सूचना की आवश्यकता होती है जो वह करता है। हजारों लाखों कामगार है जिन्हें विविध प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता है। परम्परागत संचार माध्यमों से इन सबकी जरूरत की पूर्ति संभव नहीं है।

इसलिए आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का बेहतरीन इस्तेमाल इस मांग को पूरा करने में किया जा सकता है। जिससे संदेशों को गुणित रूप से प्रत्येक कामगार तक पहुँचाया जा सके। टी.वी. चैनल ऐसा ही एक जनमाध्यम है जो इस लक्ष्य की पूर्ति करता है। जिसके द्वारा सम्प्रेषण मात्र गुणित रूप से ही नहीं अपितु सफलता के साथ सम्पादित होता है। विकास सम्बन्धी विषयों के प्रचार-प्रसार में टी.वी. चैनल का प्रयोग नई क्रान्ति ला सकता है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए जिस मनोवैज्ञानिक और भौतिक वातावरण की जरूरत होती है, उसका निर्माण करने में टी.वी. चैनलों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत जैसे देश में जहां साक्षरता की दर आज भी विकसित देशों की तुलना में काफी कम है और आबादी का बड़ा हिस्सा पढ़ना-लिखना नहीं जानती, वहां बोलती तस्वीरों ने सामाजिक चेतना जागृत करने

की दिशा में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है। "मार्शल मैकलूहान का कथन है "Medium is the message" क्योंकि माध्यम पर ही निर्भर है कि संदेश का विस्तार किस मात्रा में, किन लोगों तक, किन रूपों में होगा।"[4]

वैश्वीकरण ने हिन्दी टीवी समाचार चैनलों की भाषा, प्रस्तुति और सामग्री को गहराई से प्रभावित किया है। आज चैनल अधिक अंतरराष्ट्रीय शैली अपनाते हैं, तकनीकी रूप से आधुनिक होते जा रहे हैं, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण उनकी भाषा में बाज़ार-उन्मुखता तथा सनसनीखेज़ी बढ़ी है। "वैश्वीकरण और संचार कांति से जो नई वैश्विक शब्दावली सामने आई है, उसके लिए भी हिंदी ने अपने दरवाजे पूरी तरह से खोल दिए हैं। विज्ञान, तकनीक, संचार, कंप्यूटर, मनोरंजन, फैशन, फूड, लाइफ स्टाइल आदि से संबंधित कई नए शब्दों को धीरे-धीरे हिंदी ने अपना लिया है। भाषा को आप चाहे संस्कृति का ही अंग मानें चाहे उससे भिन्न, दोनों के घनिष्ठ संबंध को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वाक्य-रचना की पद्धति हमारी चिंतन-पद्धति पर निर्भर होती है। आप अपनी भाषा में कर्म को क्रिया से पहले बिठाते हैं या बाद में, यह आपकी परंपरागत जातीय चिंतन-प्रक्रिया पर निर्भर है।"[5]

हिंदी मीडिया चाहे वो प्रिंट में हो या इलेक्ट्रॉनिक, इसी खुली, उदार और समावेशी चरित्र बाली हिंदी के साथ विकसित हुई है। "भारत में मीडिया के विशाल साम्राज्य को खड़ा करने में हिंदी ने महती भूमिका निभाई है, लेकिन इन्हीं भारतीय जनमाध्यमों को लेकर कुछ विद्वान सशंकित हैं। उनकी मानें तो भारत में उदारीकरण के बाद भारतीय जनमाध्यम और पूर्ववर्ती भारतीय जनमाध्यम में जमीन आसमान का अंतर है। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्ष 1990 के दशक को संधिकाल मान सकते हैं जहाँ से हिंदी जनमाध्यम में विभाजन स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। यही वो वक्त है जब से मीडिया हो या फिल्में, परिवर्तनकारी लक्षण परिलक्षित होने लगे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विशेषतः टी.वी. न्यूज़ की भाषा में युगान्तरकारी परिवर्तन तब आया जब आजतक न्यूज़ कार्यक्रम की कमान सुरेंद्र प्रताप सिंह ने संभाली। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि भारतीय टी.वी. न्यूज़ चैनल की भाषा के जनक सुरेंद्र प्रताप सिंह ही थे। उन्होंने टी.वी. न्यूज़ को प्रतिस्पर्धात्मक बनाया। समाचार सामग्री के साथ उसके प्रस्तुति पर भी जोर दिया जाने लगा।"[6]

मानव जीवन में भाषा का अत्यन्त महत्त्व है। भाषा संस्कृति की संवाहिका है। किसी भी देश का प्रतिबिम्ब उस देश की संस्कृति और भाषा होती है। भाषा विहीन देश और उसका समाज कभी विकसित नहीं होता। मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार, जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं आपका कोई राष्ट्र नहीं। भाषा का विकास राष्ट्र का विकास है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ी है। इसमें भारतीय संस्कृति की सुगन्ध आती है। प्राचीन काल से आज तक यह विविध रूपों में विकसित हो रही है।

देश के चतुर्दिक विकास में संचार माध्यमों की ताकतवर भाषा का अत्यधिक योगदान है। विश्व की सम्पूर्ण जानकारियों को ये माध्यम पलक झपकते ही हमारे सामने प्रस्तुत कर देते हैं। संचार माध्यम हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। ये हमारे जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं। भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में तीव्रगामी परिवर्तन संचार माध्यमों की देन है। इन माध्यमों के प्रभावकारी होने का मुख्य कारण है, इनमें प्रचलित हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप। हिन्दी जो कभी साहित्यिक क्षेत्र तक सीमित थी, संचार माध्यमों में अनेक छटाएँ बिखेरती देखते-ही-देखते लोकप्रिय भाषा बन गई है।

संचार क्रान्ति एवं वैश्वीकरण के दौर में हमारे देश के संचार माध्यमों में राष्ट्रभाषा हिन्दी की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मुद्रण एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिन्दी विभिन्न स्वरूपों में दिखाई दे रही है। हिन्दी भाषा का प्रयोग ग्रामीण और शहरी दर्शकों को जोड़ता है, जिससे सांस्कृतिक एकता मजबूत होती है। "भूमंडलीकरण और बाजारीकरण के चलते हिन्दी के सामने अनेक चुनौतियां भी खड़ी हुई। सूचना एवं संचार जगत् में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी आज भी प्रचलित है, किन्तु

हिन्दी ने इस क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली है। जनमानस में उसकी विश्वसनीयता बढ़ गई है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में यह विभिन्न स्वरूपों में दिखाई दे रही है। समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तक, पोस्टर, साहित्य आदि क्षेत्रों में अब यह भाषा अलग-अलग रूपों में आ रही है। इसकी भाषायी संरचना में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।"[7]

समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति सीधे तौर पर सामाजिक समरसता को प्रभावित करती है। यदि भाषा संयमित, संतुलित और समावेशी हो तो यह समाज में एकता और विश्वास को बढ़ाती है; वहीं उत्तेजक, पक्षपाती या विभाजनकारी भाषा सामाजिक तनाव और असमानता को जन्म देती है।

हिन्दी केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति का वाहक है। इसमें भारतीय दर्शन, अध्यात्म, लोकजीवन और आधुनिकता का संगम मिलता है। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति के अनुरक्षण का सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि भाषा ही वह धागा है जो परंपराओं, विचारों और भावनाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी जोड़ता है। हिन्दी के माध्यम से हम विविधता में एकता का अनुभव करते हैं, क्योंकि यह उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक लोगों को जोड़ती है। हिन्दी भाषा का संरक्षण तभी सार्थक होगा जब हम इसे आधुनिक तकनीक, शिक्षा और वैश्विक संवाद में सक्रिय रूप से प्रयोग करें। हिन्दी में विज्ञान, तकनीक और डिजिटल सामग्री का निर्माण संस्कृति को भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाने का मार्ग है। हिन्दी को केवल परंपरा की भाषा न मानकर भविष्य की भाषा के रूप में अपनाना ही भारतीय संस्कृति के अनुरक्षण का सबसे प्रभावी तरीका है।

समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति सीधे तौर पर सामाजिक समरसता को प्रभावित करती है। यदि भाषा संयमित, संतुलित और समावेशी हो तो यह समाज में एकता और विश्वास को बढ़ाती है; वहीं उत्तेजक, पक्षपाती या विभाजनकारी भाषा सामाजिक तनाव और असमानता को जन्म देती है। कई चैनल टीआरपी के दबाव में उत्तेजक शब्दावली और नाटकीय प्रस्तुति का प्रयोग करते हैं। इससे समाचार तथ्यात्मक कम और भावनात्मक अधिक हो जाते हैं। जब चैनल संतुलित भाषा का प्रयोग करते हैं, तो विभिन्न वर्गों के बीच संवाद और समझ बढ़ती है।

निष्कर्षः

समकालीन हिन्दी टीवी समाचार चैनलों की भाषिक प्रवृत्ति आधुनिकता और परंपरा का मिश्रण है। यह प्रवृत्ति समाज को जोड़ने की क्षमता भी रखती है और विभाजन का खतरा भी पैदा करती है। इसलिए आवश्यक है कि हिन्दी समाचार चैनलों की भाषा संतुलित और समावेशी हो, जिससे यह सामाजिक समरसता को मज़बूत करने का सबसे प्रभावी साधन बन सके। वैश्वीकरण के कारण संचार माध्यमों में राष्ट्रभाषा हिन्दी की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

संदर्भ स्रोतः

1. गोरावारा, प्रेमकृष्णः राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनभाषा, संपर्क भाषा और उपभाषा, राजभाषा हिन्दी, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ0 322।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसादः भाषा, साहित्य और देश, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली पृ0 44।
3. तिवारी, डॉ. अर्जुनः आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 117।
4. राजगढ़िया, विष्णु: जनसंचारःसिद्धांत और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण नई दिल्ली, पृ0 104।
5. शर्मा, राम विलासः संस्कृति और भाषा, राजभाषा हिंदी, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ0 46।
6. पांडेय, डॉ. गोविंदजीः हिंदी पत्रकारिता: संभावनाएं एवं चुनौतियां, हेमाद्रि प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 88।

7. गाडगिल डॉ. वसुधाः मीडिया की भाषा, अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्सए नई दिल्ली, आत्म कथ्य, पृ0 xii।

डॉ. राजेश सिं हकुशवाहा

एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.